

वैज्ञानिक अनुसंधान में देश में सिएमौर सीरी पिलानी



पिलानी . पिलानी स्थित सीरी कैंपस।

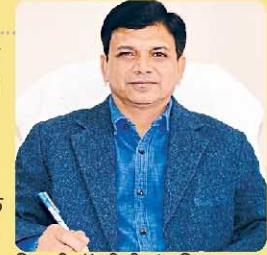
पत्रिका ब्लूज़ नेटवर्क

rajasthanpatrika.com

पिलानी. शिक्षा नगरी पिलानी बेहतर शिक्षा के लिए तो विश्व भर में अपनी अनुठी पहचान रखती ही है यहां के वैज्ञानिक अनुसंधान ने भी अंचल को देश भर में गौरव दिलवाया है। कर्सों में संचालित केन्द्रीय इलेक्ट्रोनिकी अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान (सीरी) के वैज्ञानिकों की टीम द्वारा समय पर इजाद की गई तकनीकों से न केवल शेखावाटी का बलिक राजस्थान प्रदेश का गौरव बढ़ा है। देश में वैज्ञानिक अनुसंधानों को गति देने के लिए तत्कालीन सरकार ने आजादी से पूर्व 26 सितम्बर 1942 को वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद की स्थापना की थी। परिषद की स्थापना के बाद से ही देश में वैज्ञानिक अनुसंधान को बल मिला। वर्तमान में सीएसआईआर की देश भर में 38 प्रयोगशाला संचालित हैं। केन्द्रीय इलेक्ट्रोनिकी अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान (सीरी) सीएसआईआर की प्रयोगशालाओं में से एक है। सीरी संस्थान की सर्वेक्षण को उत्तम रूप से अब देशवासी स्वयं पर, अपनी व्यवस्था पर और अपने वैज्ञानिकों पर विश्वास करने लगे हैं। सरकार अपनी संस्थाओं की सफलता-असफलता पर साथ खड़ी रहती है। चंद्रयान-2 मिशन के अंतिम क्षणों में विर म लैंडर से संपर्क टूटने पर इसरो के नियंत्रण कक्ष में होत्साहित इसरो प्रमुख डॉ. के सिवन को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा व्यक्तिश्वरूप उपरिस्थित रह कर सात्कार के भावुक पल आज भी हमारे मन-मस्तिष्क में ताजा हैं। हमारा देश अब न केवल बड़े साहसिक फैसले ले रहा है बल्कि देश की सामरिक आवश्यकताओं को देखते हुए हर संभव कदम उठा रहा है। डीआरडीओ द्वारा एंटी सैटलाइट मिसाइल परीक्षण हो या कम खर्च में मंगल मिशन को पूरा करना हो, हमने हर क्षेत्र में अपनी धाक जमा कर भारत को विकसित और अग्रणी राष्ट्रों की कतार में खड़ा किया है। अंतत मुझे यह कहने में कोई गुरेज़ नहीं कि हमें अपने इतिहास, अपनी संस्कृति और अपने पास उपलब्ध ज्ञान पर गर्व करना चाहिए। मेरा प्रबल विश्वास है कि जो देश अपने इतिहास, अपनी भाषा और संस्कृति पर गर्व नहीं करते वे धीरे-धीरे विलुप्त हो जाते हैं। यद्यपि भारत ने अब तक बहुत कुछ अर्जित किया है परंतु अभी भी बहुत कुछ अर्जित किया जाना शेष है। 19 वीं सदी ब्रिटिश उपनिवेशवाद की रही, 20 वीं सदी अमरीका की रही और जैसा कि अनेक सर्वेक्षणों के आधार पर विश्व के कई चिंतकों ने यह भी घोषणा कर दी है कि 21 वीं सदी एशिया की होगी।

ज्ञान-विज्ञान के बल पर 21 वीं सदी में बजेगा भारत का डंका

पिलानी. लोकतांत्रिक मूल्यों में हमारी आस्था और विश्वास हम भारतीयों की सबसे बड़ी शक्ति है। आज सूचना प्रौद्योगिकी और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ने जीवन को पूरी तरह रूपांतरित कर दिया है। अन्य क्षेत्रों के साथ साथ विज्ञान में भी हमारी प्रगति उल्लेखनीय रही है। सीएसआईआर की स्थापना देश का गौरव बढ़ाने के लिए मील का पथर बना। 1942 में



पिलानी.डॉ. पी.सी. पंचारिया, निदेशक 'सीरी पिलानी।